

HIN2B09b

(Compréhension de l'écrit)

Cours -12

भारत उगाएगा बीटी बैंगन श्याम सुंदर - बीबीसी संवाददाता, दिल्ली

बीटी बैंगन के रूप में भारत में पहले खाद्य उत्पाद *produit alimentaire* के व्यवसायीकरण का रास्ता लगभग साफ़ है। बीटी बैंगन उगाने के प्रस्ताव *proposition* को मंजूरी देने या ना देने के लिए बनी कमेटी ने माना है कि इस फ़सल को उगाने को लेकर जो आशंका प्रकट की जा रही थीं, वो सही नहीं हैं।

बीटी बैंगन पैदा करने को लेकर कई गैर सरकारी संगठन *ONG* और किसान संगठन विरोध प्रकट करते रहे हैं।

लेकिन इस कमेटी के अनुसार अनुवांशिक *génétique* रूप से संवर्द्धित *augmenté* फ़सलों को लेकर जो भी अध्ययन और आंकड़े *statistiques* उपलब्ध हैं उनसे पता चलता है कि इनसे सेहत या पर्यावरण पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप निदेशक *directeur* डॉक्टर स्वप्न कुमार दत्ता जो फ़सल विज्ञान के विशेषज्ञ हैं, कहते हैं “आज की बैठक में इस बात पर विस्तार से विचार किया गया कि ये सेहत और पर्यावरण के लिए कितना सुरक्षित है, बीटी बैंगन उगाने के समर्थन *appui* में दिए गए वैज्ञानिक आंकड़ों, विशेषज्ञों की राय, सभी सुझावों और प्रतिक्रियाओं *réaction* को लिया गया और उन पर विचार किया गया और ये पाया गया कि बीटी बैंगन सेहत और पर्यावरण के लिए पूरी तरह से सुरक्षित है।”

बीटी बैंगन उगाने के प्रस्ताव का विरोध करने वाले संगठनों का कहना है कि अनुवांशिक संवर्द्धित फ़सलों पर किये गए परिक्षण ये साबित कर चुके हैं कि ये फ़सलें सेहत और पर्यावरण दोनों के लिए सही नहीं हैं।

उनके अनुसार बीटी बैंगन खाने से इंसान की कई रोगों से लड़ने की क्षमता *capacité* कम हो सकती है। ग्रीनपीस से जुड़े राजेश कृष्णा का कहना है कि बीटी फ़सलों का उत्पादन सेहत, पर्यावरण और देश के आर्थिक सामाजिक ढांचे *infrastructure* पर बहुत बुरा प्रभाव छोड़ता है।

वो कहते हैं कि जानवरों पर हुए प्रयोग में ये माना गया है कि अनुवांशिक संवर्द्धित फ़सलों का लीवर और किडनी पर बुरा प्रभाव पाया गया, इसके अलावा रोगों से लड़ने की क्षमता पर भी इन फ़सलों का असर अच्छा नहीं रहा है।

कृष्णा ये भी कहते हैं कि पर्यावरण को लेकर भी ये साबित हो चुका है कि ये फ़सलें जैविक विविधता *biodiversité* के लिए अच्छी नहीं हैं। उनका कहना है कि ये फ़सलें कई कीड़ों *insectes* को भी मार देती हैं। मसलन अमरीका के उन इलाकों में जहां इस तरह की फ़सलें उगाई जाती हैं वहां तितलियों *papillons* की संख्या में ज़बरदस्त कमी आई है।

mardi 08 mai 2012

ये संगठन कहते हैं कि भारत जैसे देशों के सामाजिक आर्थिक ढांचे के लिए भी इन फ़सलों पर ज़ोर नहीं दिया जाना चाहिए. इन संगठनों का कहना है की बीटी फ़सलों के बीज पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एकाधिकार monopole है और किसान इन कंपनियों से उंचे भावों पर बीज ख़रीदने के लिए मजबूर होंगे.

ग्रीनपीस के राजेश कृष्णा कहते हैं की भारत मे बीटी बीजों का उत्पादन करने वाली कंपनियों ने अमरीकी बहुराष्ट्रीय कंपनी मोंसेंटो को 600 करोड़ रुपए रॉयलटी के तौर पर दिए यानि मोंसेंटो ने बिना कोई बीज उपलब्ध कराए पेटेंट patent/brevet उसके नाम पर होने से इन कंपनियों से इतना पैसा वसूला जो अंतत भारत के किसान से आया.

हालांकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपनिदेश डॉक्टर स्वपनकुमार दत्ता का कहना था कि ये आशंकाएं निर्मूल sans fondement है